शोध मंथन Vol. XVI No.3 July.- Sept. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *https://anubooks.com/journal-volume/shodhmanthan-vol-xvi-june-2025-no3*

वाराणसी नगर की नगरीय भू–आकृति विज्ञान का नगरीकरण पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन

प्राप्तिः 02.09.2025
स्वीकृतः 14.09.2025

73

डॉ0 धनंजय उपाध्याय
सहायक आचार्य (भूगोल विभाग)
एस.एम. आर.डी. पी.जी कॉलेज,
भुरकुरा, गाजीपुर

विनय कुमार
सहायक आचार्य (भूगोल विभाग)
जनता डिग्री कॉलेज,
पतला, गाजियाबाद
इमेलः*vk9881879@gmail.com*

सारांश

भू–पर्पटी गत्यात्मक है। भू–आकृति पृथ्वी की सतह की प्राकृतिक भौतिक विशेषताओं को कहते है, जैसे पर्वत, पहाड़ियाँ, पठार और मैदान। ये भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होती है, जिनमें पृथ्वी के भीतर की अन्तर्जात शक्तियाँ (ज्वालामुखी गतिविधि, प्लेट विवर्तनिकी) और बाहर की बहिर्जात शक्तियाँ (प्रवाहित जल, पवन, हिम) शामिल है। भू–आकृतियों में हजारों–लाखों वर्षो में परिवर्तन होता रहता है। नगरीय भू–आकृति विज्ञान में नगरों (शहरों) के भौतिक रूप व संरचना का अध्ययन किया जाता है। नगरों की भू–आकृति विज्ञान के अध्ययन के माध्यम से नगरों के आवासों (इमारतों), सडकों, फैलाव (विस्तार), खुले क्षेत्रों के प्रतिरूप को समझने में सहायता मिलती है। नगरीकरण (शहरीकरण) के विकास में नगर की भू–आकृति का विशेष महत्व होता है। नगर किसी क्षेत्र के भौतिक विकास व सांस्कृतिक प्रगति का सूचक होता है। नगर का विकास स्वयमेव ही मानव और उसकी सभ्यता का विकास होता है। नगरीकरण (शहरीकरण) सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। भारत में जहां 1951 में 17.29 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती थी वहीं 2011 में 31.16 प्रतिशत जनसंख्या नगरों (शहरों) में निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत के 53 शहरों (नगरों) में 10 लाख से अधिक जनसंख्या निवास करती है जिसमें वाराणसी नगर में 11.98 लाख जनसंख्या रहती थी। नगरीकरण (शहरीकरण) जनसंख्या वृद्धि का प्रतिफल है। जहाँ 1951 में वाराणसी नगर की कुल जनसंख्या 345253 रही, वही यह 2011 में बढ़कर 1198491 (नगर निर्देशिका, जनगणना कार्य निदेशालय, लखनऊ) हो गई। प्रस्तुत शोध पत्र में वाराणसी नगर की भू–आकृति विज्ञान का नगरीकरण पर प्रभाव का भौगोलिक अध्ययन किया गया है तथा यह जानने का प्रयास किया गया है कि नगरीय भू–आकृति विज्ञान का

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.73

उस नगर के नगरीकरण (शहरीकरण) पर क्या प्रभाव पडता है तथा नगरीकरण से उस नगर में कौन–कौन सी समस्याएं उत्पन्न हुई है।

मुख्य बिंदु

नगर, शहर, भू–आकृति, वाराणसी, भौगोलिक, नगरीकरण, शहरीकरण

प्रस्तावना

नगरीकरण (शहरीकरण) किसी क्षेत्र के शहरों में निवास करने वाली जनसंख्या का अनुपात है। सर्वप्रथम एक पुरवे का विकास होता है जो धीरे–धीरे गाँव, गाँव से कस्बे व कस्बे से शहर में परिवर्तित हो जाता है। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार, शिक्षा व अन्य सुख सुविधाओं के कारण लोग नगरों की ओर प्रवास करते है जिससे नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या का अनुपात बढ़ता जाता है। डेविस ने लिखा है कि नगरीकरण एक प्रक्रिया है जिसमें बड़े शहरी केन्द्रों में जनसंख्या की एकाग्रता में मानव बस्तियों के प्रतिरूप को फैलाया गया है। मूल रूप से नगरीकरण (शहरीकरण) पारंपरिक कृषि समाज का आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन है।

1901 में भारत की 10.84% जनसंख्या नगरों (शहरों) में निवास करती थी जो 1911 में 10.29%, 1921 में 11.17%, 1931 में 11.99%, 1941 में 13.86%, 1951 में 17.29%, 1961 में 17.97%, 1971 में 19.41%, 1981 में 23.34%, 1991 में 25.72%, 2001 में 27.86% व 2011 में 31.16% हो गई। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 4041 वैधानिक नगर, 3894 जनगणना नगर व 475 शहरी समूह है। 1951 में भारत में 10 लाख वाले नगरों की संख्या 5 थी जो 2011 में बढकर 53 हो गई। वाराणसी नगर (शहर) उत्तर प्रदेश का घनी नगरीय जनसंख्या वाला क्षेत्र है जहाँ 2011 की जनगणना के अनुसार 11.98 लाख नगरीय जनसंख्या निवास करती है। वाराणसी शहर की औसत वृद्धि दर 1.52% (1872–2011) प्रति वर्ष रही है जबकि शहर (नगर) की औसत दशकीय वृद्धि दर 15.05% (1881–2011) के मध्य रही है। 1961 से 1981 के मध्य वाराणसी की जनसंख्या वृद्धि दर 50.66% रही, जिस कारण बढ़ी संख्या में लोग शहर की ओर आकर्षित हुए।

वाराणसी निसंदेह विश्व के सबसे प्राचीन शहरों में से एक है क्योंकि कई शहर और संस्कृतियाँ उभरी और गायब भी हो गई, लेकिन वाराणसी का विकास जारी रहा और धार्मिक प्रवचनों, शिक्षा, कला और शिल्प की अपनी चिरकालिक परंपराओं का पालन करता रहा। वाराणसी काशी, बनारस, आनंदवन, रूद्रवास, महामृशान, मुहम्मदाबाद जैसे विभिन्न नामों को दर्शाता है। वाराणसी नगर की नगरीय भू–आकृति विज्ञान ने नगर के नगरीकरण (शहरीकरण) में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। वाराणसी की रूपरेखा अपने धार्मिक महत्व के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। गंगा नदी के तट पर एक–शहर के रूप में इसका विकास प्राकृतिक विषेशताओं और तीर्थयात्रा दोनों के केन्द्रीय स्थिति होने से प्रभावित होती है। गंगा की ओर जाने वाली नदी के किनारे की सीढ़ियाँ, शहर के षहरी ताने–बाने का एक महत्वपूर्ण तत्व है। वाराणसी तेजी से शहरीकरण का सामना कर रहा है। सदियों की धार्मिक गतिविधियों से निर्मित शहर का बुनियादी ढांचा अब बढती आबादी, प्रदूषण और व्यावसायीकरण के दबाव का सामना कर रहा हैं। वाराणसी नगर की नगरी भू–आकृति विज्ञान को समझने से नगरीय योजनाकारों को नगर के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व से समझौता किए बिना ही विकास के प्रबंधन के लिए स्थायी समाधान तैयार करने में मदद मिलेगी।

अध्ययन क्षेत्र

वाराणसी काशी व बनारस के नाम से भी जाना जाता है यह पूर्वी उत्तर प्रदेश (पूर्वांचल) का एक प्रमुख व्यापारिक व धार्मिक केन्द्र है। मई 1956 से पूर्व इसे बनारस के नाम से जाना जाता था जो बाद में नाम परिवर्तन कर वाराणसी कर दिया गया है। वाराणसी नगर (शहर) उत्तर प्रदेश के मध्य गंगा घाटी के दक्षिण पूर्वी भाग में गंगा नदी के बांए अर्धचन्द्राकार किनारे पर $25^0$15′ उत्तर से $25^0$23′ उत्तरी अक्षांश व $82^0$55′ पूर्वी से $83^0$2′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह नगर दो नदियों के साथ गंगा के संगम के मध्य स्थित है, उत्तर में वरूणा नदी और दक्षिण में अस्सी नदी है। वाराणसी नगर (शहर) का क्षेत्रफल 112.26 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है, इसमें सात (7) शहरी उप–इकाइयाँ शामिल है। नगर की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 77 मीटर है जो अस्सी धारा के साथ दक्षिण में लगभग 72 मीटर और उत्तर में 83 मीटर है। वाराणसी नगर की सीमा पूर्व में गंगा नदी, दक्षिण में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, उत्तर पूर्व में सारनाथ (बौद्ध स्थल) और इसके पश्चिम व उत्तर पश्चिम भाग को छूती है जो ज्यादातर गांवों और कृषि भूमि से घिरा हुआ है। वाराणसी नगर को पांच प्रशासनिक क्षेत्र 14 स्वच्छता क्षेत्र व 90 वार्ड में विभाजित किया गया है। वाराणसी नगर निगम, वाराणसी छावनी बोर्ड, मऊआडीह रेलवे सेटलमेंट, श्योदासपुर और फुलवरिया के जनगणना शहर, रामनगर नगरपालिका बोर्ड और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का अधिसूचित नगर क्षेत्र है।

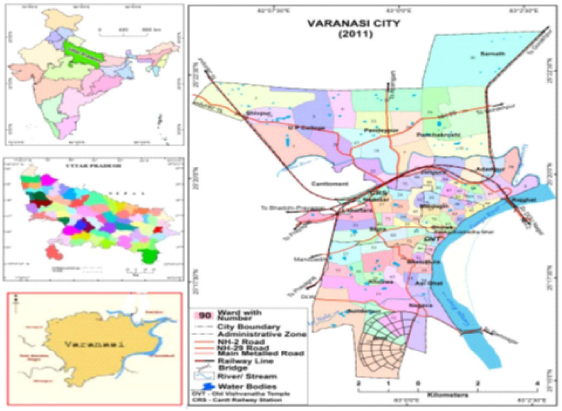

अध्ययन क्षेत्र (वाराणसी नगर)

साहित्यावलोकन

नगरीय भू–आकृति विज्ञान के अध्ययन का एक समृद्ध शैक्षणिक इतिहास है। वाराणसी नगर की नगरीय भू–आकृति विज्ञान ने शहर (नगर) के निर्माण व विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। नगरीय भू–आकृति विज्ञान से सम्बन्धित प्रमुख साहित्य निम्न है–

- **सिंह और धर्मजोग (2005)** ने अपनी पुस्तक **'भारत में नगर नियोजन'** में लगातार बढती शहरी आबादी और बदलती शहरी अर्थव्यवस्था के कारण भोपाल शहर की आन्तरिक संरचना में आए बदलावों का भौगोलिक अध्ययन किया।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.73

- **मिश्रा, आर0 पी0 (2008)** ने अपने शोधपत्र **'भारत का शहरी इतिहास–हड़प्पा सभ्यता पर ध्यान'** में शहरी इतिहास में शोध की आवष्यकता पर जोर दिया, जो समय के साथ शहरीकरण प्रक्रियाओं, शहरों के उत्थान और पतन की जांच करता है।
- **चक्रवर्ती, एम0 (2009)** ने अहमदाबाद शहर के बदलते शहरी स्वरूप को समझने और इस प्रकार स्थानिक मीट्रिक्र विश्लेषण के माध्यम से भूमि उपयोग का वर्गीकरण प्राप्त करने के लिए **'शहरी रूप विश्लेषण और भूमि उपयोग वर्गीकरण के प्रति एक दृष्टिकोणः अहमदाबाद, भारत का एक मामला'** पर अध्ययन किया।
- **तिवारी, ए0एन0, सिंह, जी0एन0** और **शर्मा, पी0 आर0 (2010)** ने **'मिर्जापुर शहर के शहरी भूमि उपयोग और योजना का मूल्यांकन'** पर अपना अध्ययन किया। इन्होंने शहरी विकास में बाधा डालने वाली भौतिक और सामाजिक–आर्थिक समस्याओं का पता लगाया और इसके भविष्य के विकास के लिए भूमि उपयोग की एक मॉडल योजना प्रस्तावित की।
- **कंबर्स (2009)** ने अपनी पुस्तक **'शहरी और क्षेत्रीय विकास में क्लस्टर में शहरी और क्षेत्रीय विकास में क्लस्टर की भूमिका पर चर्चा की** है और इस बात का एकीकृत किया कि कैसे फर्म, संगठन और क्लस्टर के भीतर नगर समय के साथ परिवर्तनों के अनुकूल होते है और कैसे क्लस्टर क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर श्रम के सीमावर्ती स्थानिक विभाजन में अन्तर्निहित है।

अध्ययन का उद्देश्य

- अध्ययन क्षेत्र. में नगरीकरण की वृद्धि दर का अध्ययन करना।
- अध्ययन क्षेत्र में नगरीकरण से उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करना।

वाराणसी नगर की नगरीय भू–आकृति

वाराणसी गंगा दोआब के सबसे बड़े शहरी केंद्रों में से एक है, जो गंगा नदी के निचले जलोढ़ मैदान में स्थित है।

भौतिक स्वरूप

वाराणसी के नगरीकण (शहरीकरण) प्रतिरूप को आकार देने में भौतिक विज्ञान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह मैदानी भाग में स्थित है। इस क्षेत्र की मिट्टी हल्के रंग की व उसमें कैल्शियम की मात्रा कम पायी जाती है। यह गंगा नदी के छोटे जलोढ़ बाढ़ के मैदान पर स्थित है। इस नगर का उत्तरी भाग राजघाट पठार का भाग है तथा दक्षिणी भाग गंगा नदी द्वारा निर्मित उपजाऊ जलोढ़ मैदान है। नदियों (गंगा व वरूणा) के साथ वाराणसी शहर के घनिष्ठ संबंधों और इसके प्राकृतिक भू–आकृतियों के प्रभाव ने न केवल इसके भौतिक रूपरेखा को आकार दिया है, बल्कि इसके ऐतिहासिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जलस्त्रोतों की निकटता और भूमि की उर्वरता ने सदियों से कृषि और वाणिज्य को बनाए रखा है, जबकि नदी के किनारे शहरी केंद्र की स्थिर स्थिति ने एक प्रमुख सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र के रूप में इसकी दीर्घायु में योगदान दिया है।

वाराणसी अपने कई तालाबों और निचले आर्द्रभूमि के लिए प्रसिद्ध था, जिसने बाढ़ के पानी के प्रबंधन में मदद की। हालांकि, समय के साथ इन प्राकृतिक विशेषताओं को या तो अपशिष्ट जल के रुके हुए तालाबों में बदल दिया गया है या शहरी आवासीय विकास के लिए रास्ता दिया गया है। लक्ष्मीकुंड, पीतरकुंड, मछोदरी, रेवाडी तालाब, मिसिर पोखरा आदि जैसे कई पूर्व जल निकास अब घनी आबादी वाले बस्ती क्षेत्र बन गए है, जो अतिरिक्त पानी के प्रबंधन के अपने मूल उद्देश्य और क्षमता को खो रहे है। वाराणसी शहर (नगर) की औसत ऊंचाई लगभग 77 मीटर है, जिसमें 72 से 83 मीटर तक की भिन्नताएं है। राजघाट पठार के पास सबसे अधिक ऊँचाई 83 मीटर तक पहुँचती है और इसकी पूर्वी ओर गंगा नदी की सीमा है। शहरी विकास के कारण वाराणसी शहर के जल निकासी प्रतिरूप में काफी बदलाव आया है। कई दिशाओं में विस्तार ने पानी के प्राकृतिक प्रवाह को बदल दिया है, और कई मामलों में जल निकासी प्रणालियों ने तेजी से नगरीकरण (शहरीकरण) के साथ तालमेल रखने के लिए संघर्ष किया है।

मिट्टी

वाराणसी नगर की भूमि उपजाऊ व प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है। वाराणसी नगर पर खादर मिट्टी का अधिक विस्तार पाया जाता है मह मिट्टी बहुत उपजाऊ है और शहर में फसलों की सबसे अधिक पैदावार इन मिट्टी से बने क्षेत्रों से होती है। खादर मिट्टी वाराणसी शहर (नगर) के पश्चिमी कोने में गंगा नदी के किनारे और वरूणा नदी के उत्तरी कोने में एक संकीर्ण पट्टी पर कब्जा करती है। यहां मिट्टी का रंग भूरे से लेकर गहरे भूरे रंग तक होता है।

जलवायु

जलवायु जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। वाराणसी शहर (नगर) में स्वस्थ वातावरणीय परिस्थितियाँ पाई जाती है। शहर में आर्द्र उपोष्ण कटिबंधीय मानसून प्रकार की जलवायु मिलती है। वाराणसी शहर की जलवायु पूरे गंगा–यमुना दोआब के समान है।

वाराणसी नगर में जनसंख्या वृद्धि व नगरीकरण

जनसंख्या वृद्धि का उपलब्ध भूमि और जल संसाधन के उपयोग पर प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है। जनसंख्या वृद्धि का सीधा प्रभाव उस क्षेत्र की भूमि पर पडता है और अगर यह वृद्धि शहरी क्षेत्रों में हो तो उसका सीधा प्रभाव नगरीय जनसंख्या पर पड़ता है। वाराणसी नगर (शहर) की 1853 में जनसंख्या 185484 थी जो 1881 की शहरी जनगणना में बढकर 218573 हो गई, जो 16.67% की वृद्धि दर को दर्शाती है। वर्ष 1891 व 1901 में शहर में जनसंख्या में बहुत धीमी वृद्धि हुई। 1901 में जहां शहर में 215223 जनसंख्या निवास करती थी वहीं यह 1951 की जनगणना के अनुसार बढ़कर 345253 हो गई, 1931 से वाराणसी शहर की आबादी में लगातार वृद्धि हुई है। 1931–1941 के दौरान शहर ने 27.18% की सराहनीय वृद्धि दर्ज की। 1941–1951 के दशक (वृद्धि–33.48%) के दौरान तीव्र वृद्धि पाकिस्तान से आए शरणार्थियों और पड़ोसी ग्रामीण क्षेत्रों से नौकरी चाहने वालों सहित बड़ी संख्या में प्रवासियों के आने के कारण हुई।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.73

वाराणसी नगर में जनसंख्या वृद्धि (1853 – 2011)

जनगणना वर्ष	जनसंख्या	दशकीय भिन्नता (व्यक्ति)	दशकीय भिन्नता (प्रतिशत में)
1853	185984	–	–
1865	173352	–12632	–6.79
1872	187347	13995	8.07
1881	218573	31226	16.67
1891	223375	4802	2.20
1901	215223	–8152	–3.64
1911	205420	–9803	–4.55
1921	200022	–5398	–2.63
1931	203372	3350	1.67
1941	258646	55274	27.18
1951	345253	86607	33.48
1961	478403	133150	38.57
1971	588608	110205	23.4
1981	720755	132147	22.45
1991	929270	208515	28.93
2001	1091918	162648	17.50
2011	1198491	106573	9.76

स्रोतः नगर निर्देशिका (1872–2011), जनगणना कार्य निर्देशालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

स्रोतः नगर निर्देशिका (1853–2011), जनगणना कार्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ से उपलब्ध आंकडों पर आधारित।

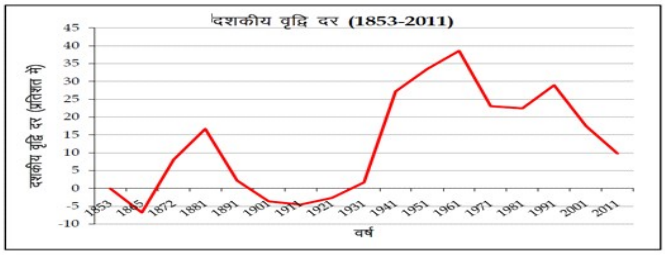

स्रोतः नगर निर्देशिका (1853–2011), जनगणना कार्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ से उपलब्ध आंकडों पर आधारित।

नगरीकरण (शहरीकरण) वह प्रक्रिया है जिसमें एक क्षेत्र विभिन्न प्रकार की सुविधाओं में वृद्धि के कारण तीव्र बसाव के रूप में चिंह्नित होता जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का वह क्षेत्र नगरीय होगा जिसमें निम्न विशेषताएं होगी–

1. न्यूनतम जनसंख्या 5000 व्यक्ति।
2. 75 प्रतिशत पुरुष कार्यशील जनसंख्या गैर–कृषि कार्यो में लगा हो।
3. जनसंख्या घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हो।

उत्तर प्रदेश में जहां 1951 में 8331470 जनसंख्या नगरों में निवास करती थी वहीं वाराणसी नगर में 345253 लोग नगरों (शहरों) में रहते थे, जो 2011 में उत्तर प्रदेश में बढ़कर 44478000 हो गई तो वहीं दूसरी तरफ 2011 में वाराणसी शहर में 1198491 जनसंख्या नगर में निवास करती थी।

नगरीय जनसंख्या : उत्तर प्रदेश व वाराणसी नगर

जनगणना वर्ष	उत्तर प्रदेश	वाराणसी नगर
1951	8331470	345253
1961	9104867	478403
1971	11827290	588608
1981	19014255	720755
1991	25971831	929270
2001	34539582	1091918
2011	44478000	1198491

स्त्रोतः जनगणना रिपोर्ट

वाराणसी नगर की औसत वृद्धि दर 1.52% (1872–2011) प्रति वर्ष रही है, जबकि शहर (नगर) की दशकीय वृद्धि दर 15.05% (1881–2011) के मध्य रही है। 1961 से 1981 के दौरान वाराणसी की जनसंख्या की वृद्धि दर 50.66% रही, जिस कारण वाराणसी शहर की जनसंख्या में भी तीव्र वृद्धि दर देखी गई। 2011 में वाराणसी शहर की जनसंख्या 1198491 थी जो 2001 में 1091918 थी। 2001–2011 के मध्य शहर की नगरीय जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर 9.76% रही। अगर यह वृद्धि अगामी वर्षो में भी जारी रही तो वर्ष 2021 में शहर की आबादी 1315466, 2031 में 1443857 व 2041 में 1584783 होने की सम्भावना रहेगी।

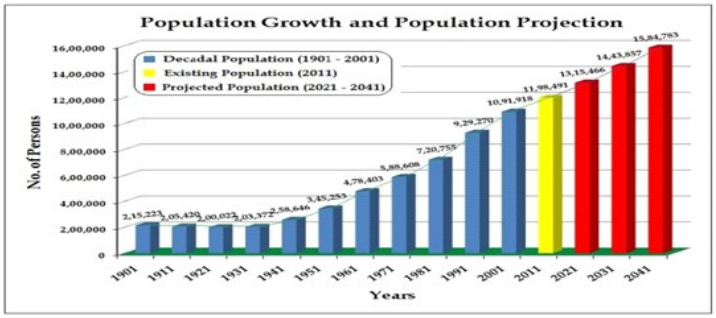

स्रोतः नगर निर्देशिका (1901–2011), जनगणना कार्य निदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ से उपलब्ध आंकडों पर आधारित एवं लेखकों द्वारा गणना, 2024

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.73

नगरीय भू–आकृति व नगरीकरण

एक क्षेत्र की भू–आकृति उस क्षेत्र पर मानव बसाव को सर्वाधिक प्रभावित करती है। वाराणसी नगर की नगरीय भू–आकृति ने लोगों को नगर की ओर आकर्षित किया। वाराणसी नगर एक जलोढ़ मैदानी क्षेत्र है जहां गंगा, वरूणा नदी प्रवाहित होती है। वाराणसी नगर को 90 वार्ड में विभाजित किया गया है। वाराणसी नगर के उन वार्डो में सर्वाधिक जनसंख्या मिलती है जो गंगा नदी के तट से जुडे हुए है। नगरीय जनसंख्या की सघनता के आधार पर वाराणसी नगर को तीन स्तरों में विभाजित किया गया है जिसमें 90 वार्ड शामिल है।

वाराणसी नगर में वार्डवार जनसंख्या का स्थानिक प्रतिरुप, 2011

स्तर	जनसंख्या	वार्डो की संख्या	वार्डो के नाम
उच्च	20000 से अधिक	07	जोलहा, शिवपुरवा, सराय सुरजन, नरिया, नगवा, तरना, तुलसीपुर
मध्यम	10000–20000	60	लल्लापुरा कला, नदेसर, बेनिया, रामापुरा, कटेहर, लक्सबघा, छित्तनपुरा, चेतगंज, लहंगपुरा, काल भैरव, रेवड़ी तालाब, भेलूपुरा, बघरा, सराय गोवर्धन, मध्यमेश्वर, कतुआपुरा, खोजवा, सिरसौली काजीसादुल्लापुरा, काजीपुरा, दारागंज, बलुआबीर, बसनिया, खजुरी, ओमकालेश्वर, ईश्वरीगंगी, पंडरीबाग, दीनदयालपुर, चौकाघाट, प्रह्लाद घाट, पियरीकला, सारनाथ, सिकरौल, धूपचंडी, कमलगढ़ा, रानीपुरा, नवादा, नवापुरा, रामरेपुर, दिधोरी महल, बजरडीहा, पठानी टोला, विनायका, नई बस्ती, शिवपुर, सुन्दरपुर, राजाबाजार, लहरतारा, मवैया, जलालीपुरा, नारायणपुर इंद्रपुर, हुकुलगंज, सरैया, लालपुर खुर्द, लोकोछित्तुपुर, अलाईपुरा, कोनिया गाओ, पहड़िया, पांडेयपुर
निम्न	10000 ls de	23	दशाश्वमेध, बन्धुकाच्चिबाग, हबीबपुरा, शिवाला, सिगरा, गोला दीनानाथ, बिरदोपुर, राजघाट, कामेश्वर महादेव, जमालुदीनपुरा, गढ़वासी टोला, बंगाली टोला, राज मंदिर, मदनपुरा, जगतगंज, आगागंज, नवाबगंज, रसूलपुरा, कमालपुरा, भदैनी, हरहा सराय, पांडे हवेली, जंगमवारी

स्रोतः भारत की जनगणना (2011), शोधकर्त्ता द्वारा गणना के आधार पर

1. उच्च जनसंख्या सघनता वाला क्षेत्र (20000 से अधिक व्यक्ति)– वाराणसी नगर के 7 वार्ड (जोलहा, शिवपुरवा, सराय सुरजन, नरिया, नगवा, तरना व तुलसीपुर) ऐसे है जहां की जनसंख्या 20000 से अधिक है। ये वार्ड शहर के परिधीन क्षेत्र में स्थित है।
2. मध्यम जनसंख्या सघनता वाला क्षेत्र (10000–20000 व्यक्ति) वाराणसी शहर के 60 वार्ड ऐसे है जिनकी जनसंख्या 10 हजार से 20 हजार के मध्य है। लल्लापुरा कला, पठानी टोला, भेलपुरा, राजघाट, अलीपुरा, सरैया आदि प्रमुख यहां के वार्ड है।
3. निम्न जनसंख्या सघनता वाला क्षेत्र (10000 से कम व्यक्ति) वाराणसी नगर के 23 वार्ड इस श्रेणी में आते है। इनमें से कुछ वार्डो (मुस्लिम बहुल) में जनसंख्या का दबाव अधिक है। इस क्षेत्र के अधिकांश वार्ड हरहा सराय, जंगमवारी, मदनपुरा आदि व्यावसायिक क्षेत्र में आते है।

शहर की नगरीय भू–आकृति विज्ञान ने शहर में जनसंख्या के वितरण को प्रभावित किया। तटीय क्षेत्रों में सर्वाधिक जनसंख्या की सघनता देखने को मिलती है।

नगरीकरण से उत्पन्न समस्याएं

नगरीकरण (शहरीकरण) जहां एक तरफ विभिन्न प्रकार की सुख–सुविधाओं (रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य) का प्रतिनिधित्व करता है तो वहीं दूसरी तरफ नगरीकरण विभिन्न प्रकार की नई–नई समस्याओं को भी जन्म देता है। वर्तमान में प्रत्येक शहर तीव्र नगरीकरण के कारण विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहे है। वाराणसी नगर की औसत वृद्धि दर 1.52% (1872–2011) प्रति वर्ष रही है। जिस कारण वाराणसी नगर में 2011 में 1198491 लोग निवास करते है, जो 2001 की (1091918) तुलना में 9.76% अधिक है। नगरीकरण ने वाराणसी शहर में निम्न समस्याओं को जन्म दिया है–

1. नगर में मलिन बस्तियों की संख्या में वृद्धि।
2. नगर में जल निकास की समस्या।
3. नगर में जनसंख्या घनत्व में वृद्धि।
4. नगर में क्षैतिज भूमि की उपलब्धता में कमी।
5. नगर का अनियंत्रित फैलाव व अपर्याप्त योजना तंत्र।
6. नगर के पर्यावरण का क्षरण।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश तीव्रता से नगरीकरण की तरफ बढ़ता जा रहा है। वाराणसी नगर के तीव्र व अनियोजित शहरी विस्तार ने महत्वपूर्ण अवसंरचनात्मक कमियों, पर्यावरण क्षरण और सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को जन्म दिया है जिस कारण इसके शहरी (नगरीय) भू–आकृति विज्ञान का अध्ययन करना आवश्यक है। वाराणसी नगर की भू–आकृति उसे एक उपजाऊ मैदानी रूप प्रदान करती है। वाराणसी का अपना एक ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व रहा है। वाराणसी शहर गंगा नदी के तट पर स्थित होने के कारण इसका विकास प्राकृतिक विशेषताओं और तीर्थयात्रा दोनों के केन्द्रिय स्थिति होने से प्रभावित रहा है। गंगा की ओर जाने वाली नदी के किनारे की सीढियाँ, शहर के शहरी ताने–बाने का एक महत्वपूर्ण तत्व है। वाराणसी शहर में 11.98 लाख जनसंख्या (2011 की जनगणना) निवास करती है जिसमें 1.52% की औसत वृद्धि दर मिलती है। शहर की संकीर्ण गलियाँ और घनी इमारते वाराणसी के विकास में रहने के पारंपरिक तरीको और भौगोलिक बाधाओं दोनों को दर्शाती है। 1991 में वाराणसी भारत की 10 लाख आबादी वाला शहर बन गया। भारत के 53 मिलियन (दस लाख) वाले शहरों में वाराणसी का 32वां स्थान (2011 की जनगणना) है।

शोध अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि वाराणसी शहर की नगरीय भू–आकृति विज्ञान ने शहर को ऐतिहासिक व सांस्कृतिक रूप से विकसित होने के अवसर प्रदान किये और शहर ने तीव्र विकास किया, लेकिन जहां एक तरफ शहर में नगरीकरण का विकास हुआ तो वहीं दूसरी तरफ आज शहर (वाराणसी) विभिन्न प्रकार की समस्याओं (मलिन बस्ती, प्रदूषण) का भी सामना कर रहा है। अतः इस तरफ शहरी योजनाकर्त्ताओं, नगर निगम व गैर सरकारी संगठनों को विशेष रूप से ध्यान आकर्षित कर शहर को विकास के पथ पर आगे ले जाना है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.73

संदर्भ

1. Araby, M. E. (2002), 'Urban Growth and Environmental Degradation', Cities, 19(6), PP. 389-400.
2. Birch, E. L. (2008), The Urban and Regional Planning Reader, Routledge, London.
3. Carter, H. (2002), The Study of Urban Geography, Arnold Heinemann, London.
4. Lal, V.N. (1984), Ghazipur Town: A Study in Social Geography, Unpublished Ph.D. Thesis, Department of Geography, University of Allahabad, Allahabad.
5. Bancal, S.C., 'Nagariya Bhuyol, Meenakshi Prakashan, Meerut.
6. Singh, R.L. (1955), Banaras: A Study in Urban Geography, Nand Kishore & Brothers, Varanasi.
7. Venkateswarla, U. (1998), Urbanization in India: Problems and Prospects, New Age International (P) Ltd. Publishers, New Delhi.
8. Ramachandran, R. (1989), Urbanization and Urban Systems in India, Oxford University Press, New Delhi.
9. सिंह, ओ.पी. (1979), नगरीय भूगोल, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी।
10. रफीउल्लाह, एस. एम. (1968), दी ग्रोथ एण्ड डिस्ट्रीब्युशन ऑफ पॉपुलेशन इन रिलेशन टू एग्रीकल्चरल रिसोर्स इन अपर गंगा यमुना दोआब, 1901–1951, अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।
11. यादव, हीरालाल (1999), जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
12. तिवारी, आर.सी. (2011), अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
13. चतुर्वेदी, आर.के. (2011), गंगा घाघरा दोआब के नगरों का कालानुगत उद्भव और आकारिकी सरंचना, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, भूगोल विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
14. रामचन्द्रन, आर. (2013), भारत में शहरीकरण और शहरी प्रणालियां, वितस्ता पब्लिसिंग, प्रा0लि0 न्यू दिल्ली।
15. शंकर, रमा. (2022), भूमि उपयोग जनसंख्या एवं सांस्कृतिक स्वरूप, गंगा प्रकाशन, एल व ए, गली नं. 42, सादतपुर एक्सटेंशन दिल्ली।